क्रियायोग अनुसन्धान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति

संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo.ca

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है

क्रम संख्या.....

दिनाँक.....

प्रकाशनार्थ

2 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

''सॉच को ऑच नहीं ''

क्रियायोग ध्यान से सत्य की अनुभूति होने पर समस्त कष्टों का समापन

2 फरवरी 2013 इलाहाबाद । ''सॉच को ऑच नहीं । सत्य की अनुभूति होने पर ऑच –सभी प्रकार के दैहिक, दैविक और भौतिक तापों का समापन हो जाता है । यहॉ ऑच का अभिप्राय सभी प्रकार के कष्टों से है । सबसे बडा कष्ट अज्ञानता है जिसे अविद्या कहा गया है । अविद्या समस्त कष्टों का मूल कारण है । अपने अमर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान स्वरूप की अनुभूति न कर पाना ही अविद्या है । अविद्या के प्रभाव से मनुष्य सुख–दुःख, पाप–पुण्य, लाभ–हॉनि, जय–पराजय आदि द्वन्दात्मक मायावी भावों का अनुभव करता है । अविद्या के कारण मनुष्य अपने और परमात्मा के बीच दूरी की अनुभूति करता है । हम अलग हैं, परब्रह्म अलग हैं । हम अलग है तथा आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा दृश्य और अदृश्य जगत की समस्त रचनाओं का स्वरूप अलग–अलग है, की मायावी अनुभूति ही अविद्या है । क्रियायोग ध्यान से अविद्या का लोप होने पर समस्त रचनाओं का स्वरूप एक है, का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है । इसी अवस्था को अहंम ब्रह्मास्मि की अनुभूति कहा गया है। ऐसी अवस्था में स्पष्ट ज्ञान हो जाता है कि एक ही परब्रह्म दृश्य और अदृश्य जगत की समस्त रचनाओं के रूप में

प्रकाशित हैं ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कुम्भ मेले में आये हुए कल्पवासियों, तीर्थयात्रियों तथा देश–विदेश से आये हुए साधकों को क्रियायोग प्रशिक्षण देते हुए व्यक्त किया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने कहा कि धर्मग्रन्थों को पढकर याद करके उसे पुनः उसी रूप में व्यक्त करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेना ज्ञान की प्राप्ति का सूचक नहीं है । अविद्या के समापन के लिए अनुभूतिजन्य ज्ञान की आवश्यकता है तथा अनुभवजन्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए क्रियायोग ध्यान सरलतम्, श्रेष्टतम्, सर्वसुलभ, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक प्रविधि है । क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मानव स्वरूप के सिर रीढ में स्थित अलौकिक ज्ञानकेन्द्रों का जागरण होने पर अविद्या का लोप हो जाता है । ऐसी अवस्था में मनुष्य दृष्य और अदृष्य जगत के सम्पूर्ण रहस्यो का ज्ञान प्राप्त कर लेता है । उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि दृश्य और अदृश्य जगत एक दूसरे से उसी प्रकार संयुक्त है जिस प्रकार आग और आग की दाहक शक्ति । ब्रह्माण्ड का प्रत्येक विन्दु जो खाली स्थान के रूप में दिखता है, जहॉ हमारी भौतिक ऑखें कुछ भी नहीं देख पाती हैं, समस्त ऋषिगण, पैगम्बर, देवी–देवता सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं । दृश्य और अदृश्य जगत के बीच दूरी शून्य है । क्रियायोग ध्यान से अन्तःकरण के ज्ञान चक्षुओं के जागृत होने पर साधक की दृष्टि निर्मल हो जाती है जिससे वह अतीत–वर्तमान–भविष्य के सम्पूर्ण रहस्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है । इन्द्रियातीत अवस्था में साधक को जिन अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति होती है उसे अष्टसिद्धियॉ कहा गया है । अष्टसिद्धियों को शास्त्रों में रहस्यमय रूप में इस प्रकार व्यक्त किया गया है – अॅधे ने मोती में छिद्र किया, अॅगुलीहीन ने उसमें धागा पिरोया, गृवाहीन ने उसे गले में धारण किया और जिह्वाहीन ने उसकी प्रशंसा किया ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6 से 7 बजे तक, श्री श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 5 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता